6. पउड दोहा के आधार पर सन्त की विशेषताओं को लिखिए।

7. विउसीहे पुत्त बहूहे कहाणगु के आधार पर मानव जीवन की सार्थकता का वर्णन कीजिए।

8. सावयधम्मदोहा के आधार पर श्रावक के धर्मों का विवेचन कीजिए।

9. दोहा छन्द का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

DAL–02

December – Examination 2021

Diploma in Apabhransha Language Examination

अपभ्रंश गद्य-पद्य एवं छन्द विवेचन

Paper : DAL-02

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **5×4=20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है।

1. (i) नाभेयचरिउ किस ग्रन्थ का अंश है ?

   (ii) परमात्मप्रकाश किसकी रचना है ?

   (iii) अमांगलिक पुरुष की किन्हीं **दो** विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

   (iv) कुवयमालिनी छन्द का लक्षण लिखिए।

(v) परमात्म प्रकाश के आधार पर ज्ञानी व्यक्ति की क्रिया किस प्रकार की होती है ?

(vi) अपभ्रंश भाषा के महाकाव्य का नाम लिखिए।

(vii) अन्तिम देह वाले दो राजाओं के नाम लिखिए।

(viii) धाई वाहन राजा किस राज्य में राज करते थे ?

(ix) मुनि नयनन्दी के प्रथम शिष्य का क्या नाम था ?

(x) सन्देशरासक के प्रणेता कौन हैं ?

खण्ड—ब **4×20=80**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गाथा का हिन्दी में अनुवाद एवं व्याकरणिक विश्लेषण लिखिए :

(अ) सायरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइं।
सामि सुभिच्चु विपरिहरइ संमाणेइ खलाइं॥

अथवा

(ब) जिह समिलहिं सायरगयहिं दुल्लहु जूयहु रंधु।
तिह जीवहं भवजलगयहं मणुयत्तणि संबुधु॥

3. गेहि सूरु की कथा को संक्षेप में समझाइए।

4. सन्देश रासक खण्डकाव्य में वियोग शृंगार का वर्णन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य का हिन्दी में अनुवाद एवं व्याकरणिक विश्लेषण लिखिए :

(अ) सो सुवण्णयारु भएण कंपमाणु एत्तहे-तेत्तहे अवलोएंतु मग्गि आवणवीहीहिं गच्छंतु जइयहुं सागवावारी हट्टसमीव आगउ तइयहुं केण जणेण पक्कचिब्भडु बाहिर पक्खित्तु, तं तु तासु सुवण्णयारस्सु पिट्ठ भागे लग्गिउ। तेण णाउ केणावि हउं पहरिउ। पिट्ठदेसि हत्थें फासेइ, तेत्थु चिब्मडस्सु रसु बीआइं च फासेवि विआरिउ—अहो! हउं गाढयरु पहरिउ म्हि, तेण घाएण समउ सोणिउ पि निग्गउ, तासु मज्झे कीडगा वि समुप्पन्ना। एम अच्चंतभयाउलो तुरन्तें गच्छंतु घरदारे समागउ।

अथवा

(ब) एगाए वुड्ढाए उत्त नारीहु मज्झे इमाहे पुत्तबहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जे सा एव अपमत्ता, गिहकज्जहिं वि कुसला नन्ना एरिसा। इमाहे सासू निब्मगा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तबहूए वि धम्मकज्जि पेरिज्जमाणावि धम्मु ण कुणेइ, इमु सुणेवि बहुगुणरंजिआ ताहे मुहहे धम्मो पत्तो। धम्मपत्तीहिं छम्मासा जाया, तओ पुत्तबहूए छम्मासा कहिआ, तं जुत्तु।